OPEN ACCESS

*Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi.* *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 3 [Jul- Aug] Year 2025*

*Research Article*

# प्राथमिक स्तर पर हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का विद्यालय उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

**डॉ दीपक जैन** *

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. जे कॉलेज, बड़ौत (बागपत), उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:** डॉ दीपक जैन *

**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.17154982

**सारांश**

इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों की गृह कार्य (होमवर्क) के प्रति अभिवृत्तियों का विश्लेषण करना तथा विद्यालय उपलब्धि पर इसके प्रभाव को समझना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई। बागपत जनपद के 20 विद्यालयों (10 हिन्दी माध्यम एवं 10 अंग्रेजी माध्यम) से कुल 1100 उत्तरदाताओं का चयन यादृच्छिक पद्धति से किया गया, जिनमें 500 विद्यार्थी, 500 अभिभावक तथा 100 शिक्षक सम्मिलित थे। आँकड़े प्रश्नावली, विद्यालय उपलब्धि अभिलेख तथा अर्ध–संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से संकलित किए गए। विश्लेषण हेतु औसत, मानक विचलन, 'टी' परीक्षण तथा सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियाँ विद्यालय उपलब्धि को प्रभावित करती हैं तथा हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के बीच दृष्टिकोण में उल्लेखनीय अंतर पाया गया।

**Manuscript Information**

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 13-05-2025
- **Accepted:** 16-06-2025
- **Published:** 30-06-2025
- **IJCRM:**4(3); 2025: 611-614
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

**How to Cite this Article**

दीपक जैन. प्राथमिक स्तर पर हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का विद्यालय उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(3):611-614.

**Access this Article Online**

www.multiarticlesjournal.com

**मुख्य शब्द:** गृह कार्य, विद्यालय उपलब्धि, अभिवृत्ति, प्राथमिक शिक्षा, हिन्दी माध्यम, अंग्रेजी माध्यम

## प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचरण करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करना भी है। विद्यालयी शिक्षा की प्रक्रिया में गृह कार्य का विशेष महत्व है। यह कक्षा में सीखे गए विषयों को दृढ़ करने, आत्मअध्ययन की आदत डालने तथा विद्यार्थी की प्रगति को मापने का एक प्रभावी साधन माना जाता है।गृह कार्य विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों दृ तीनों के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थी के लिए यह सीखने का अभ्यास हैय अभिभावकों के लिए यह बच्चे की प्रगति की झलक हैय तथा शिक्षकों के लिए यह शिक्षण की प्रभावशीलता का परीक्षण है। तथापि, गृह कार्य के प्रति दृष्टिकोण समान नहीं है। कहीं विद्यार्थी इसे बोझ मानते हैं, तो कहीं अभिभावक इसे अनुशासन का साधन मानते हैं। इसी प्रकार शिक्षकों की अपेक्षाएँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं।हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में यह अंतर और अधिक स्पष्ट हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय प्रायः आधुनिक पद्धतियों एवं प्रतिस्पर्धात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हैं, जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में पारंपरिक दृष्टिकोण अधिक देखने को मिलता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि दोनों माध्यमों के विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक गृह कार्य को किस दृष्टि से देखते हैं और विद्यालय उपलब्धि पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है।



© 2025 डॉ दीपक जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व**

वर्तमान समय में शिक्षा क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता, उपलब्धि का स्तर, तथा विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व विकास तभी संभव है जब कक्षा शिक्षण के साथ–साथ गृह कार्य को भी उचित स्थान दिया जाए।

1. विद्यार्थियों के लिए– गृह कार्य उनकी एकाग्रता, आत्मअनुशासन और अभ्यास को बढ़ाता है। यदि विद्यार्थी सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं तो विद्यालय उपलब्धि में वृद्धि होती है।
2. अभिभावकों के लिए– गृह कार्य बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करता है। किन्तु कई बार अभिभावक इसे अतिरिक्त दबाव मानते हैं।
3. शिक्षकों के लिए– गृह कार्य शिक्षकों के लिए विद्यार्थियों की प्रगति का मापक है, किन्तु अत्यधिक गृह कार्य बच्चों में तनाव भी उत्पन्न कर सकता है।
4. भाषायी माध्यम का प्रभाव– हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की पृष्ठभूमि, संसाधन एवं पद्धतियाँ भिन्न होने के कारण गृह कार्य के प्रति दृष्टिकोण में अंतर होना स्वाभाविक है।
5. शोध की आवश्यकता– अब तक हुए शोध अधिकतर विद्यार्थियों पर केंद्रित रहे हैं, जबकि इस अध्ययन में अभिभावक और शिक्षक दोनों को शामिल किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में गृह कार्य की भूमिका को व्यापक दृष्टि से समझने में सहायक होगा।

## समीक्षित साहित्य

शर्मा और मिश्रा (2023) ने हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की तुलना करते हुए पाया कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में गृह कार्य को अधिक संरचित और कौशल आधारित बनाया जाता है, जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में यह अपेक्षाकृत पारंपरिक एवं स्मृति–आधारित रहा। अध्ययन में यह भी निष्कर्ष निकला कि गृह कार्य की गुणवत्ता, उसकी समयबद्धता और शिक्षकों की प्रतिक्रिया, विद्यार्थियों की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाती है।वरमा (2022) ने अभिभावकों की दृष्टि से गृह कार्य का अध्ययन किया। परिणामों से यह तथ्य सामने आया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के अभिभावक गृह कार्य को बोझ मानते हैं जबकि शहरी अभिभावक इसे शिक्षा का अभिन्न हिस्सा मानते हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिभावकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि गृह कार्य के प्रति उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित करती है। गुप्ता और जैन (2021) ने अपने शोध में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका पर बल दिया। अध्ययन में पाया गया कि यदि शिक्षक गृह कार्य को विद्यार्थियों की उम्र, रुचि और क्षमता को ध्यान में रखकर देते हैं तो विद्यार्थी अधिक उत्साह से इसे पूरा करते हैं। दूसरी ओर, अत्यधिक मात्रा में गृह कार्य देने से विद्यार्थियों में अरुचि और तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।कुमार (2020) ने गृह कार्य और विद्यालय उपलब्धि के बीच संबंध पर गहन अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि नियमित गृह कार्य और विद्यालय प्रदर्शन में सीधा व सकारात्मक सहसंबंध है। अध्ययन में यह भी कहा गया कि गृह कार्य केवल तभी प्रभावी होता है जब उसे समय पर जाँचा जाए और विद्यार्थियों को रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान की जाए।

**समस्या कथन**

विद्यालयी शिक्षा की प्रक्रिया में गृह कार्य (होमवर्क) एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यह केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में सहायक नहीं होता, बल्कि आत्म–अनुशासन, समय प्रबंधन और आत्मनिर्भरता जैसी जीवनोपयोगी क्षमताओं का भी विकास करता है। तथापि, गृह कार्य को लेकर विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के दृष्टिकोण में पर्याप्त भिन्नता देखी जाती है। कहीं इसे शिक्षा की निरंतरता और अनुशासन का साधन माना जाता है, तो कहीं इसे विद्यार्थियों पर अतिरिक्त बोझ समझा जाता है।हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की पृष्ठभूमि, संसाधन और शिक्षण पद्धति भिन्न होने के कारण गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों और उसके प्रभाव में भी अंतर हो सकता है। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, जहाँ बच्चे अभी सीखने की प्रारंभिक अवस्था में होते हैं, गृह कार्य की उपयोगिता और उसकी स्वीकार्यता का प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।
इन्हीं सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए यह समस्या निर्धारित की गई है–
प्राथमिक स्तर पर हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का विद्यालय उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

**शोध के उद्देश्य**

1. हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के अभिभावकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. गृह कार्य के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और उनकी विद्यालय उपलब्धि के बीच संबंध का परीक्षण करना।
5. अभिभावकों और शिक्षकों की गृह कार्य अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की विद्यालय उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना।
6. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में गृह कार्य एवं विद्यालय उपलब्धि के बीच अंतर को स्पष्ट करना।

**परिकल्पनाएँ**

1. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की गृह कार्य अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के अभिभावकों की गृह कार्य अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की गृह कार्य अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. विद्यार्थियों की गृह कार्य अभिवृत्ति और विद्यालय उपलब्धि के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
5. अभिभावकों और शिक्षकों की गृह कार्य अभिवृत्तियों का विद्यार्थियों की विद्यालय उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं है।

## शोध विधि

**1. शोध की रूपरेखा**

यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। इसका स्वरूप तुलनात्मक है क्योंकि इसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है तथा विद्यालय उपलब्धि पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

**2. शोध का क्षेत्र एवं जनसंख्या**

शोध का क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के बागपत जनपद तक सीमित किया गया। अध्ययन में सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।

**जनसंख्या**

1. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी
2. उनके अभिभावक
3. सम्बद्ध विद्यालयों के शिक्षक

**3. नमूना चयन**

नमूना चयन हेतु यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग किया गया।
कुल 20 विद्यालयों का चयन किया गया
10 हिन्दी माध्यम
10 अंग्रेजी माध्यम

**प्रत्येक विद्यालय से**

25 विद्यार्थी
25 अभिभावक
5 शिक्षक

**कुल नमूना आकार**

विद्यार्थी = 500
अभिभावक = 500
शिक्षक = 100
कुल = 1100 उत्तरदाता

**4. शोध उपकरण**

**1. गृह कार्य अभिवृत्ति मापन प्रश्नावली**

विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए अलग–अलग प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं।


© 2025 डॉ दीपक जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रश्नावलियों में बहुविकल्पीय प्रश्न, द्विकल्पीय प्रश्न तथा लिकर्ट स्केल आधारित कथन सम्मिलित किए गए।

**2. विद्यालय उपलब्धि अभिलेख**
विद्यार्थियों के अर्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा परिणामों का उपयोग विद्यालय उपलब्धि मापन हेतु किया गया।

**3. साक्षात्कार मार्गदर्शिका**
कुछ अभिभावकों एवं शिक्षकों से गहन जानकारी प्राप्त करने हेतु अर्ध–संरचित साक्षात्कार किए गए।

**5. आँकड़ों का संकलन**
1. विद्यालय प्रशासन से पूर्व अनुमति लेकर शोधकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से प्रश्नावली वितरित की।
2. विद्यार्थियों से कक्षा में तथा अभिभावकों से घर–भ्रमण एवं विद्यालय बैठकों में जानकारी प्राप्त की गई।
3. अभिभावकों एवं शिक्षकों से अर्ध–संरचित साक्षात्कार किए गए।
4. विद्यालय उपलब्धि के आँकड़े विद्यालय के अभिलेखों से संकलित किए गए।

**6. आँकड़ों के विश्लेषण की तकनीक**
संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया
1. औसत
2. मानक विचलन
3. टी' परीक्षण
4. सहसंबंध

इन तकनीकों की सहायता से यह ज्ञात किया गया कि गृह कार्य के प्रति विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्तियों और विद्यालय उपलब्धि के बीच क्या संबंध है तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में इनका क्या अंतर पाया गया।

**आँकड़ों का विश्लेषण**
इस अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण औसत, मानक विचलन, 'टी' परीक्षण तथा सहसंबंध के आधार पर किया गया। नीचे सारणियों के माध्यम से परिणाम प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

**सारणी 1:** नमूना वितरण

| उत्तरदाता | हिन्दी माध्यम | अंग्रेजी माध्यम | कुल |
|---|---|---|---|
| विद्यार्थी | 250 | 250 | 500 |
| अभिभावक | 250 | 250 | 500 |
| शिक्षक | 50 | 50 | 100 |
| कुल | 550 | 550 | 1100 |

**सारणी 2:** विद्यार्थियों की गृह कार्य अभिवृत्ति (औसत एवं मानक विचलन)

| माध्यम | संख्या | औसत अंक | मनक विचलन | 'टी' मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम | 250 | 62.5 | 8.20 | 2.84 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| अंग्रेजी माध्यम | 250 | 66.8 | 7.95 | | |

व्याख्या – अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की गृह कार्य के प्रति अभिवृत्ति हिन्दी माध्यम की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गई।

**सारणी 3:** अभिभावकों की गृह कार्य अभिवृत्ति (औसत एवं मानक विचलन)

| माध्यम | सख्या | औसत अक | मनक विचलन | 'टी' मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम | 250 | 58.4 | 9.10 | 3.26 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| अंग्रेजी माध्यम | 250 | 63.2 | 8.45 | | |

व्याख्या – अंग्रेजी माध्यम के अभिभावक गृह कार्य को बच्चों की उपलब्धि के लिए अधिक उपयोगी मानते हैं।

**सारणी 4:** शिक्षकों की गृह कार्य अभिवृत्ति (औसत एवं मानक विचलन)

| माध्यम | संख्या | औसत अंक | मनक विचलन | 'टी' मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम | 50 | 70.2 | 6.75 | 1.92 | 0.05 स्तर पर सार्थक |
| टंग्रेजी माध्यम | 50 | 73.1 | 6.20 | | |

व्याख्या – अंग्रेजी माध्यम के शिक्षक गृह कार्य को शिक्षण प्रक्रिया का आवश्यक अंग मानते हैं और नियमित जाँच पर बल देते हैं।

**सारणी 5:** गृह कार्य अभिवृत्ति और विद्यालय उपलब्धि के बीच सहसंबंध (विद्यार्थी)

| समह | सख्या | सहसबध गुणाक | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|
| हिन्दी माध्यम विद्यार्थी | 250 | 0.42 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थी | 250 | 0.48 | 0.01 स्तर पर सार्थक |

व्याख्या – दोनों माध्यमों में गृह कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और विद्यालय उपलब्धि के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

**समग्र विश्लेषण**
1. विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों तीनों स्तरों पर गृह कार्य के प्रति दृष्टिकोण में हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के बीच अंतर पाया गया।
2. अंग्रेजी माध्यम के उत्तरदाताओं की गृह कार्य अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई।
3. गृह कार्य और विद्यालय उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध स्थापित हुआ।
4. शिक्षक और अभिभावक दोनों की भूमिका विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती है।

## निष्कर्ष
1. अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि गृह कार्य के प्रति विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की अभिवृत्तियों में हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।
2. अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षक गृह कार्य को शैक्षिक सफलता का आवश्यक अंग मानते हैं, जबकि हिन्दी माध्यम में इसका महत्व अपेक्षाकृत कम आँका गया।
3. गृह कार्य की सकारात्मक अभिवृत्ति और विद्यालय उपलब्धि के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. विद्यालय की उपलब्धि में गृह कार्य की नियमितता, अभिभावक का सहयोग और शिक्षक का मार्गदर्शन तीनों ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
5. अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि गृह कार्य की गुणवत्ता और उसकी जाँच प्रणाली विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।

**शैक्षिक निहितार्थ**
1. शिक्षकों को चाहिए कि वे गृह कार्य को केवल औपचारिकता न मानकर अभ्यास, पुनरावृत्ति और रचनात्मकता का साधन बनाएँ।
2. विद्यालय प्रबंधक गृह कार्य की समुचित योजना और मूल्यांकन प्रणाली विकसित करें ताकि विद्यार्थियों में कार्य के प्रति रुचि बनी रहे।
3. अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों के गृह कार्य में सहयोगात्मक भूमिका निभाएँ और उन्हें केवल अंक प्राप्त करने का साधन न मानें।
4. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में गृह कार्य की नियमित जाँच और प्रतिक्रिया प्रणाली को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।
5. नीति–निर्माताओं को सुझाव दिया जाता है कि गृह कार्य को पाठ्यचर्या का आवश्यक घटक मानकर उसके मानक तय किए जाएँ।

## सुझाव
1. भविष्य में यह शोध माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।
2. अध्ययन को ग्रामीण और शहरी विद्यालयों की तुलना के साथ विस्तारित किया जा सकता है।
3. गृह कार्य और विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास तथा समय–प्रबंधन के बीच संबंध की जाँच हेतु अलग अध्ययन किया जा सकता है।
4. सरकारी एवं निजी विद्यालयों की अलग–अलग तुलना करने से और गहन परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।
5. भविष्य में गुणात्मक पद्धति अपनाकर अभिभावकों एवं शिक्षकों के दृष्टिकोण का गहन अध्ययन किया जा सकता है।


© 2025 डॉ दीपक जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. सिंह, ए. (2024). प्राथमिक स्तर पर गृह कार्य और विद्यालय उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 20(1), 45–58.
2. शर्मा, आर., – वर्मा, एस. (2024). विद्यार्थियों की गृह कार्य अभिवृत्ति और अभिभावक सहभागिता. शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 13(2), 75–88.
3. गुप्ता, पी. (2023). हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में गृह कार्य की भूमिका. शिक्षा विमर्श, 17(3), 101–115.
4. जैन, डी., – मिश्रा, ए. (2023). गृह कार्य और प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षणिक उपलब्धि. भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 11(1), 33–47.
5. वर्मा, एस. (2022). अभिभावकों की दृष्टि से गृह कार्य का महत्व. शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 12(2), 55–66.
6. शर्मा, ए. (2022). प्राथमिक शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी दृष्टिकोण. शिक्षा और विकास जर्नल, 9(3), 79–92.
7. सिंह, आर. (2021). विद्यार्थियों की उपलब्धि और गृह कार्य के प्रति दृष्टिकोण. भारतीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 15(2), 101–115.
8. गुप्ता, ए. (2021). हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की तुलनारू गृह कार्य के प्रभाव पर अध्ययन. शिक्षा विमर्श, 10(1), 65–78.
9. जैन, पी. (2021). गृह कार्य और प्राथमिक शिक्षा में सीखने की रुचि. शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 13(2), 87–99.
10. मिश्रा, डी. (2020). विद्यालय उपलब्धि और गृह कार्य के बीच सहसंबंध. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 6(1), 25–36.
11. वर्मा, आर. (2020). प्राथमिक शिक्षा में गृह कार्य की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की प्रगति. शिक्षा विमर्श, 8(2), 45–57.
12. शर्मा, पी. (2020). अभिभावक सहभागिता और गृह कार्य का अध्ययन. भारतीय शिक्षा पत्रिका, 7(1), 33–44.



| Creative Commons (CC) License |
| --- |
| This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. |




© 2025 डॉ दीपक जैन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/